दिनांक 28 सितम्बर, 2018

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा ही नहीं जा सकता – प्रो. विजय बहादुर सिंह

- सांची विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस
- "आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है"
- भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है
- रामायण और महाभारत काल में दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ी थी
- मूल्यों को बचाने के लिए दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है
- डॉ रजनीश शुक्ल ने षड दर्शन पर प्रस्तुत किया चिंतन
- वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है- डॉ शर्मा
- अंतिम दिवस मध्य प्रदेश की राज्यपाल होंगी कार्यक्रम की मुख्य अतिथि
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन परियोजना का शुभारंभ करेंगी
- वन मंत्री श्री शेजवार और संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा भी सम्मिलित होंगे

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। "साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां " के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

प्रो. सिंह का कहना था कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है, गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। वर्तमान दौर में चल रहे धर्म और राजनीति पर उन्होंने कहा कि आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्की राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है....इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

दर्शन और साहित्य के तालमेल के विषय में प्रो. विजय बहादुर सिंह का कहना था कि दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है और भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है। महाकाव्यों रामायण और महाभारत के बारे में उन्होंने कहा कि उस काल में मूल्यों को बचाने के लिए दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ी जो कि दोनों ही महाकाव्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है यानी दर्शन के मूल्यों को बचाने के लिए साहित्य का सहारा लेना पड़ता है और साहित्य कभी भी हिंसा नहीं सिखाता।

धर्म के विषय पर उन्होंने आगे कहा कि धर्म की सर्वाधिक चिंता मनुष्य को है जो कि व्यर्थ है, जबकि जानवर और पक्षी और अन्य रचनाएं भी इसी सृष्टि का हिस्सा हैं लेकिन उन्हें धर्म की चिंता नहीं है। साहित्य समीक्षा पर उनका कहना था कि कलाकृति के उतपन्न होने के बाद ही आलोचक या समीक्षक पैदा होता है। किसी भी रचना या कला के

विषय में उनका कहना था कि रचनाकार दरअसल सृष्टा है। भारतीय दर्शन के विषय पर उन्होंने कहा कि जिज्ञासा और प्रश्न ही भारतीयता की बुनियादी पहचान हैं।

दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन के षड दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे।

तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने "अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण" विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए किस प्रकार के साधन की आवश्यकता होगी। सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. ए.डी शर्मा ने "मानवतावादी ज्ञान- विनिर्माण का अद्वैतमूलक पद्धतिशास्त्र" ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है जिससे भारतीय दर्शन को बहुत नुकसान हो रहा है।

प्रो. शर्मा का कहना था कि कोई भी ज्ञान बुद्धि का सम्यक उद्यान नहीं है तो वह आधुनिकता का नहीं है। उनका कहना था कि आधुनिक मापदंडों को कैस भारतीय दर्शन पर लागू किया जाए यही सांची विवि द्वारा आयोजित की गई कार्यशाला का उद्देश्य है। उनके अनुसार आने वाले 200 वर्षों बाद दर्शन की धारा युक्तिगत विकास में होगी। चौथे दिवस अंतिम सत्र में प्रो. आर. सी सिन्हा और डॉ नितिन व्यास ने भी अपने शोध प्रस्तुत किए।

इस पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल सम्मिलित होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी और "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन" पर आधारित परियोजना का शुभारंभ भई करेंगी। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मध्य प्रदेश के वन मंत्री श्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा होंगे।